



## वंशीलीला ॥

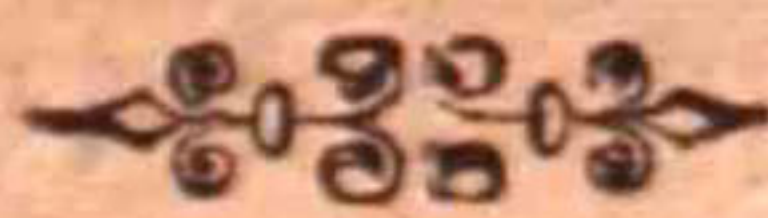
बाबू श्यामलाल बाजपेयी कृत

जिसमें

परब्रह्मपरमात्मासच्चिदानन्दश्रीकृष्णचन्द्रकेमानसी  
चरित्रवंशीलीलाकावर्णनहै॥

इस पुस्तक को

बाबूश्यामलाल बाजपेयी ने भक्तजनों के  
हृदयानन्द के लिये अनेक महात्माओं  
के पद संग्रहकर रची



लखनऊ

तीसरीबार

मुंशोनवलकिशोर के छापेखानेमें छापीगई

जुलाई सन् १८८६ ई० ॥



श्रीराधाकृष्णभ्यां नमः ॥

## अथ बंशीलीला ॥



ललितावचन ॥ अरीसखी आज वृन्दावन में ऐसी मोह  
नी बंशीबजी है हँवैसखी १ ॥

दो० वृन्दावन बंशीबजी मोहे तीनों लोक ।

वेतीनों मोहे नहीं रहे कौनसे लोक २ ॥

विशाखा वचन ॥ अरीसखी या वंशी में विषकाली हू से  
अधिक है हँवैसखी ३ ॥

दो० आलीकाली ते अधिक बंशी विष उत्पात ।

वह काटे ते चढ़त है यह फूँके चढ़ि जात ४ ॥

चन्द्रावलि वचन ॥ अरीसखी या वंशी ने कहा तप कियो  
है हँवैसखी ५ ॥

दो० अहो बांस की बँसुरिया तैं तप की नो कौन ।

अधर सुधा पिय को पिये हँम तरफत बिच भौन ६ ॥

चंपकलता वचन ॥ अरीसखी यह बंशी बहुत ही उत्पात  
करै है हँवैसखी ७ ॥

दो० अरीक्षमाकर मुरलिया परत तिहारे पांय ।

और सखी सुनु होत सब महा दुखी हँम हाय ८ ॥

महादेवी वचन ॥ अरी सखी यह तौ पिया के बहुत ही  
मुंहला गि रही है हँवैसखी ९ ॥



दो० कह्योनकरियेक्योनहीं पिय सुहाग को राज ।  
अहोबावरीबँसुरिया मुंहलागीमतिगाज १० ॥  
रंगदेवीबचन ॥ अरीसखी या बंशीके काजहमने घर  
तजिदियोहै हँवैसखी ११ ॥

दो० तौकारण घरसुखतजो सहो जगत को घोर ।  
हमसोंतुमसोंमुरलिया कौनयामकोबैर १२ ॥  
तुंगविद्याबचन ॥ अरीसखीया बंशीनै तौचामकेदाम  
चलाये हैं हँवैसखी १३ ॥

दो० येअभिमानीमुरलिया करीसुहागिन श्याम ।  
अरीचलाये सखिनपै भले चामकेदाम १४ ॥  
महालक्ष्मीबचन ॥ अरीसखी या बंशीनै तुम्हारेरोम  
रोम में आगि लगायदईहै हँवैसखी १५ ॥

दो० बाजैमतिअबबाँसुरी मतिपियअधरनलागि ।  
अरी घरबसीदेतक्यो रोमरोममेंआगि १६ ॥  
रागसोरठ ॥ मुरलिया श्याम कहांधों पाई ॥ टेक ।  
करतनहीं अधरनतेन्यारी कहाठगोरी लाई । ऐसी ढीठ  
मिलतही होगई उनहींके मनभाई ॥ हमदेखत वहपीवै  
सुधारसदेखैरो अधिकाई । कहा भयो मुँह लागी हरिके  
बचनन लियोरिझाई ॥ सूरश्याम को बिबश करावत दे-  
खौरी अधिकाई १७ श्याम तुम्हारी मधुर मुरलिया  
तनकसीनै मनमोह्यो । जय सब जीवजंतु जलथल के  
नादस्वाद सुरपोह्यो ॥ जो तीरथव्रत कियो ऋषिन सब  
श्रमकनपीठनदीन्ही । वा तीरथके व्रत के फलतेश्याम सु-  
हागिनकीन्ही ॥ धरणधरीगोवर्द्धनधार्यो कोमिल प्राण



अधार । अब हरि लटकिये भये टेढ़े तनक मुरलिया  
भार ॥ हमें छुड़ाय अधररसपीवत करै नरंचककान । सूर-  
दासप्रभुनिकसिकुंजतें चरीसौतिभई आन १८ ॥

देशसोरठ ॥ बंशीनहीं यहसौतिहै दारी ॥ टेक ॥ या-  
हीने गृहकाज भुलाये सुधि बुधि सब हरिलई हमारी ।  
जेकुलवन्ति प्रवीन नारि जग धीरजधर्म पतिव्रतवारी ॥  
तिनहूँकीइनलाजबिगोई बनबनफिरत हैं बदनउघारी ।  
नारायणहमतोनिततरसें यहभई अधरनकीअधिकारी ॥  
कैतौ यहीरहैगीयाब्रजमेंकैब्रजमेंबसिहैंब्रजनारी १९ ॥

दो० अरीबीरसबमेलकरि या बंशीलेउ चुराय ।

रैनिदिनाकोखटकनो याब्रजसेंउठिजाय २० ॥

इतनेहीं मैं मनसुखा गयो कृष्णपै धाय ।

सबसखियनयहमतकियो बंशीलेउचुराय २१ ॥

कह्योमान घनश्यामअब बंशीदीजैमोहिं ।

नातरब्रजकीगोपिका ठगनीठगलेंतोहिं २२ ॥

श्रीकृष्णबचन ॥ अरेमनसुखा सुनतौसहीतूमेरीबंशी  
कूलेतौहैं परन्तु अच्छैधरलीजो और देखये मेरेप्राणनहूँ  
ते प्यारीहै २३ ॥

दो० बंशी उरसी फेंटमें भाज्यो मुंहमटकाय ।

जहां हतीं ब्रजगोपिका तहींपहूँचोआय २४ ॥

सखीब० अरे मनसुखा तनसुखा नेकइतैलोंआय ।

माखनमिसरीदेइंतोहिंभोजनपेटअघाय २५ ॥

दो० माखनमिसरीएसखी मोहिंन नेकसुहाय ॥

अरीसखी का कारनैं मोसों तूइठलाय २६ ॥



सखीब ० निरतकरनहमचाहतीं प्रेमसहितहरिध्यान ।

यासों प्रेमीढूँढ़तीं तासँगकर नृतगान २७ ॥

दो० सखिनसहिततबमनसुखानृत्यकरतरसबोर ।

प्रेमबिबश धरनी गिरयो बंशीलीनी चोर २८ ॥

श्रीकृष्णवचन ॥ कालिसखी यहठौर बांसुरी भूलवि  
सारी । लैजुगई तुमधाम बातहम सुनीहै तिहारी ॥ ना  
हिंन तुमरे कामकी हो बंशीहमरी देउ । अतिआतुरहैं मां  
गहींतुमनाहिंननाहिं करो ॥ बांसुरीदीजिये ब्रजनारि २९ ॥

सोरठ ॥ कहुं देखीभैया बंशी चुरावनहारी ॥ टेक ॥  
हम यमुनातट पाठकरतहै वह जलभरनेआई । सातस  
खीमिल ठेलेमेलेबंशीलीनचुराई ॥ कहुं० ॥ गोकुलढूँढ़व  
मथुराढूँढ़वढूँढ़वकुंजअटारी । पात पात वृन्दावन ढूँढ़वत  
बहुंनमिलैराधाप्यारी ॥ कहुं० ॥ आलेपातकेलहँगासोहै  
फूलभरेकैं सारी ॥ हरीदास मिरदंगीसोहै वोही वृषभानु  
दुलारी ॥ कहुं० ॥ यमुनातीरकदम जुड़िछइयां तहां खड़े  
बनवारी ॥ सूरदास बलिजाउं चरनकी तहांमिली राधा  
प्यारी ॥ कहुंदेखी० ३० ॥

युगलवचन ॥ हमारीबंशीप्यारीतुमदोवृषभानुदुलारी ॥  
हमक्याजानेंप्यारेतुमदेखोजहांबिसारी । कहांदुराईसां-  
चीबतावोमुरलीमानपियारी ॥ वहमुरलीअतिसुन्दरमेरी  
प्यारीसोंहतिहारी । हमनहिललनबिलोकीमुरली कहां  
भुलेकेहिठारी ॥ पूछतहौ क्योँ कैलकुबीले कोजानै कहां  
डारी । वहबंशी मोहिनेकन बिसरै दीजो बेगबतारी ॥  
अब न छिपावो सांचिबतावो बिनतीकरुंतिहारी । नहिं



अबजानैतुमकहांधरीहै बांसुरीश्रीगिरिधारी ॥ बारबार  
 क्योंपूंकृतहोजी मनमोहन बनवारी । याबंशीने त्रिभुवन  
 मोह्योकहांलगि कहोंबिचारी ॥ तुमतौगुननहींजानोयाके  
 सुरनरमुनि हितकारी । हमनहिं श्याम छिपावैमुरलीतु-  
 मसेकुंजविहारी ॥ सांचीकहैमुरलिया हमनेनहिंदेखीनैन  
 निहारी । यामुरलीमेरीललितमोहनीसोतुमराखोलुका-  
 री ॥ बनबनमाहिं बजावोंयाको तुमरेहीगुनगारी । सो  
 सब सांचीकहो कुंवरजी हमकहाजानैनारी । यहगुनया  
 मुरलीकेमाहीं सुनिमोहीं ब्रजवारी । हँसिमुसकाय देउ  
 तुममुरली प्यारीमोहिंबतारी ३१ ॥

सखीबचन । बंशीकैसीहोतनहीं हमनैननदेखी । पि-  
 तातुम्हारेसाध कान्हतुमफिरत अवेकी ॥ इतउत खेलत  
 तुमफिरोहो वहांहींभूलिगये । सातशब्द बाबाकीसोंहम  
 नाहिंजुनाहिलई ॥ बांसुरीकैसीहोब्रजनाथ ३२ ॥

श्रीकृष्णवचन ॥ बंशीहमरीदेउ काहेकोरार बढ़ावो  
 समझिबझि मनमाहिंकाहेकों लोगहँसावो ॥ लोग हँसें  
 चर्चाकरें तुमदेखौमनजुबिचार । यहबंशी निरमोल की  
 तुमदेतीक्योंनगवांर ॥ बांसुरीदोजियेब्रजनारि ३३ ॥

सखीबचन ॥ हमसों कहतगवांरि आपनी करत ब-  
 ड़ाई । मारुंगुलचागाल तौर बाबाकीजाई ॥ तुमसेकेति-  
 कग्वालिया हो मांगतहमपरदान । चतुराईतुमछांड़िदेउ  
 जायचरावोगाय ॥ बांसुरीकैसीहै ब्रजनाथ ३४ ॥

श्रीकृष्णवचन ॥ याबंशीकी सारिकहा तुमग्वालिन  
 जानो । तीनलोकपटतारतासों मोरेमनमानो ॥ यहबंशी



खोजत फिरें शिवविरंचि मुनिनाथ । परचाईपरचेनहींतु-  
मकहा नचावोहाथ ॥ बांसुरीदीजियेब्रजनारि ३५ ॥

सखीवचन ॥ नंदमहरकैकुंवरकान्हतोयकौनपतीजै ।  
भूलआयेकहूंअंतदोषहमकोनहिंदीजै ॥ लैलकड़ीमुखपैध  
री बंशीवाकोनाम । जिनघरऐसे पुत्रहैं लालउजरतति  
नकेगाम ॥ बांसुरीकैसीहै ब्रजनाथ ३६ ॥

श्रीकृष्णवचन ॥ उजरोभावे बसोहमेंकहाचाहतिहा  
री । तुमसरीकलखचारिनंदघरगोबरहारी ॥ इकलख  
मेरे सँगचलैं लखआवेंलखजाहिं । लखठाढ़ी दर्शनकरैं  
तुमसुंदरक्योंललचाय ॥ बांसुरीदीजियेब्रजनारि ३७ ॥

पद ॥ श्यामकीबन्शीबनपाई ॥ टेक ॥ उठौयशोमति  
खोलो किंवरिया कान्हइदेउजगाई । जो तुमजानोवंशी  
गईहै बंशीके सँगमेरी पौंची हिराई ॥ काननसुनीनयन  
नहिदेखी चलहु ठौर तोय देई बताई । सूरदासभजि  
बालकृष्णछवि दोनोंपदेएकहिचतुराई ३८ ॥

सखीकाबन्शीदेना ॥ सुघरसयानी नारि हाथगहिबं  
शीलाई । पूरणपरमानंद सांवरे मुखहि बजाई ॥ लैबंशी  
ग्वालिनमिली घूंघट बदन छिपाय । सूरदासप्रभु हारी  
ग्वालिन जीतेयादवराय ॥ बांसुरीलीजियेब्रजनाथ ३९ ॥

इतिश्रीसूरदासकृतबांसुरीलीलासम्पूर्णम् ॥

रेखता ॥ सुन्दर सलोनैश्यामनै मुरली अधरबजाई ।  
शिरमोरमुकुटकुंडलचीराअजबसुहाई ॥ सुंदर० ॥ म  
स्तकपैतिलक अद्भुत भूकुटीतनकुलचोहैं । नैननकी मा  
रीबरछीदिलबीचमेंसमाई ॥ सुंदर० ॥ सांवल कपोल



नासिका मोती पड़ा हुआ । मुखफूँकि दमकि दंत से  
 बिजुली की छबि लजाई ॥ सुंदर० ॥ बनमाल पीतपट  
 से नखशिखलों छबिसुहावै । नटवरकेभेषसेती मनलेत  
 है चुराई ॥ सुंदर० ॥ श्यामके श्यामहरषित वा रूपसे  
 निहारें । ताजीवकौन कोटिन लागें कोई दवाई ॥ सुंदर  
 सलोनेश्यामने १ मनहरलियोहैमेरो वा नन्द के दुलारे ।  
 मसकथायकै अदांसों नैनोके करइशारे ॥ इक दृष्टिहीमें  
 वाने जानेंकहाकियोहै । नहिं चैनरैन दिनमें वाकेबिना  
 निहारे ॥ मन० ॥ चीरेकेपेंचबांकेशिरमुकुटझुकिरह्योहै ।  
 कटि किंकिनी रतनकी नूपुर बजत हैं प्यारे ॥ मन० ॥  
 बेसर बुलाकसोहै गलमोतियनकीमाला । कंचनजड़ाऊ  
 करमेंनख चंदसों उजारे ॥ मन० ॥ छबिदेत आरसीसे  
 सुंदरकपोलदोऊ । बरछीसमान लोचन नईशानपै स  
 मोरे ॥ मन० ॥ फूलोंके हाथ गजरमुखपानकी ललाई ।  
 कानोंमें मोतीबालकुंडलहू झलकैन्ह्यारे ॥ मन० ॥ लखि  
 श्यामकी निकाई सुधिवुधि सकल गंवाई । बौरी बनाय  
 मोकोंकितगयोवंशीवारै ॥ मन० ॥ जंतरअनेकमंतरगंडा  
 तबीजटोना । स्यानेतबीब पंडित करिकोटियतनहारै ॥  
 मन० ॥ नारायण इन दृगननै जबसों वहरूप देखा ।  
 तबसों भयेहैं ध्यानी उघरतनहीं उघारे ॥ मन० २ ॥

इति





# बारहमासा

जिसमें

परब्रह्म श्रीकृष्णचन्द आनन्दकन्द का चरित्र मधुर  
छन्द बारहमासा में वर्णित है-गानविद्यानुरागियों  
को व सम्पूर्ण भगवद्भक्तों को विशेष फलदायक  
व आनन्दकारक है

जिसको

बाबू श्रीपालसिंह साहब रियासत अमेठी के रहने  
वाले ने बड़े परिश्रम से सकल लोक हितार्थ  
बनाया

प्रथमबार

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपी  
जनवरी सन् १८६७ ई०

हकतसनीक महफूज़ है वदक इस छापेखाने के ॥



## अथ बारहमासा ॥

### दोहा ॥

सुमिरत श्री घनश्याम को निशिदिन आठोंयाम ।  
हैं दयाल करिहैं अवशि पूरण मों मन काम ॥ १ ॥  
कबिताई यहि हेतु मैं करत सुनों दै चित्त ।  
जाते रसना तें कढ़ै नाम कृष्ण को नित्त ॥ २ ॥  
श्री मथुराजी को गये जबसों मदनगोपाल ।  
तबतें ब्रजबासी जिते रहत सकल बेहाल ॥ ३ ॥  
गोपी गणतिनमें अधिक रहत व्यथित दिनैरन ।  
देखे बिनु नंदलाल के लहत न क्षण पल चैन ॥ ४ ॥  
बारहमासा ब्याज करि कहत कछुक मैं गाय ।  
तिन सबके हिय को बिरह जातें मों दुखजाय ॥ ५ ॥  
घनाक्षरी ॥ बिनु बनमाली मेरो सदन बिलोकि खाली  
आयो चैत आली अब ताप को बढ़ायो है । फूले फूल  
तौरन के भूले भुण्ड भौरन के भाये मन औरन के मोहि  
ना सोहायो है ॥ कहै श्रीपाल इमि व्याकुल बिहाल बाल  
नैन युग भादों कैसे मेघ भरी लायो है । भयो बिरतन्त  
चित्त निरखत पंथ नित बीतिगो बसन्त पर कन्त नहीं  
आयो है ॥ १ ॥ आयो बैशाख तनजार कियो चाहै राख  
बिनु श्यामघाम लखि लागतु है ऊबरी । मलै उशीर घन-  
सार और सीरो नीर एते उपचार सों अधिक जाति हूं



बरी ॥ कासों कहों पीर हिय धरत न धीर रंचु बिनु बल-  
 वीर क्षण क्षण होत दूबरी । कहै श्रीपाल अजों आये  
 नहीं नन्दलाल भई मोहिं साल बिरमाय राखी कूब-  
 री ॥ २ ॥ आयो जेठ आली बनमाली बिनु हेरि मोहिं  
 चहुं ओर घेरि दावानल सों लगायो है । पावत न चैन  
 रैन आवत न नींद नैन भावत न ऐनमैन अधिक सतायो  
 है ॥ कासों कहों जीकी सुधि पाई नहीं पीकी कछू रही  
 हीमों हीकी पी बिदेश माहिं छायो है । कूबरी कसाइनि  
 के जाल मों बभाइ शीश कहै श्रीपाल नन्दलाल नहीं  
 आयो है ॥ ३ ॥ आयोरी अषाढ़ जामें शीश भारी गाढ़  
 परयो घेरि घेरि लागे घन बारि बरसावने । पड़त हैं बूंदें  
 तन लागत हैं बूंदवासे बिनु प्राणप्यारे नैन लागे भरी  
 लावने ॥ कारे कारे घटन मों छटा की छटनि पेखि कहै  
 श्रीपाल हियलागी डरपावने । जावने की बारकही आव-  
 ने को एकबार सावनो समीप पै न आये मनभावने ॥ ४ ॥  
 सावन मों कारे कारे आवत पयोद वारे बिनु प्राण प्यारे  
 उपचार कौन करिये । दामिनी की दमक चमक जुगुनू  
 गणकी तमकी तमक पेखि कहैं लगे डरिये । दादुर देर  
 अरु टेर पपिहा की सुनि सुनि श्रीपाल हियकेतो दुख  
 भरिये । गावत हैं मोर बन तावत अतन तन आवत बि-  
 हारी न कटारी मारि मरिये ॥ ५ ॥ भादों मेघ लाये भरी  
 मोहिं पै न आये हरी बिनु उन भायेनरी ताये तन कामरी ।  
 गाये बन मोरवा मचाये भेक शोरवा न आये चितचोरवा  
 पराये भये श्यामरी ॥ कहै श्रीपाल आये आपु ना पठाये  
 हाल बिन लाल रोयमैं गवाँये आठ्यामरी । छाये पी बिदेश



माहिं पाये मैं सँदेश नाहिं आये ना अँदेश जी लोभाये  
 टेढ़ी बामरी ॥ ६ ॥ आयो री कुआर घर यशुदा कुमार  
 नहिं तातें बार बार मार मार कियो शरकी । कहै श्रीपा-  
 ल आली मदनगोपाल बिनु लागत सदृश ज्वाल कर  
 क्षपाकरकी ॥ जबसों गयोरी फेरि सुधिना लयोरी हरि  
 कठिन भयोरी जाती छाती नहीं दरकी । हेरि हेरि राह  
 नैन दुगुण प्रबाह बढ़ै दाह चढ़ै क्षण प्रति विरह के ज्वर  
 की ॥ ७ ॥ कातिक शरद पेखि दरद विशेषि भई करद  
 सी लागी हिये आई बिथा धिरिके । पावती सुचैन रही  
 ऐन बीच रैनमाहिं ताही चन्द्रकरतें उठीहै देह बरिके ॥  
 कहै श्रीपाल इमि ब्याकुल नवेली बाल सुमिरि गोपाल  
 ख्याल दोऊनैन भरिके । दीजियेदरश करपरशि निवारो  
 पीर कीजियो न न्यारो फन्द कूबरीके परिके ॥ ८ ॥ अग-  
 हन अकेली पड़ी सेजपै नवेलीबाल बिनु नंदलाल शीत  
 अधिक सतावई । त्रिविध समीर तन लागतहैं तीर मनु  
 बिनु घनश्याम श्रीपालको बचावई ॥ आली पी हमारे  
 छोंडि हमें आपु न्यारे भये नाचतसो नाच जौन कूबरी  
 नचावई । कासों कहों एरी जौन लागई सहायमेरी जाते  
 छोंडि चेरी प्राणप्यारो धामआवई ॥ ९ ॥ पूषको तुषार  
 होन चाहतहै हीयपार बिनु यार गृह द्वार लागतभया-  
 वनो । कासों कहों आली यह नागिनिसी कालीरैनि बिनु  
 बनमाली मोहिं चाहै मुख नावनो ॥ गारुड़ी करैंगे जोतो  
 रहे प्राण तन मोतो कहै श्रीपाल न तो करैंगो परावनो ।  
 येहो मनभावन करो जु बेगि आवन ये नैन भये सावन  
 सोहात नहीं गावनो ॥ १० ॥ आयो आली माघमास हैं



न प्यारे पीउ पास भई जीउ भारी त्रासगई आस प्रा-  
नकी । देत दुख हिमि एक ओर एक ओर चन्द्र दाहतहै  
अंगमानों लपट कृशानु की ॥ रोम रोम उठै पीर भयोहै  
अधीर हिय लागत अचूक तीर तापै पंचवानकी । कहै  
श्रीपाल बाल भावै ना गोपालबिनु होतसाल आये सुधि  
बांसुरी के तानकी ॥ ११ फागुनमों बाला बाल भोरिन  
भरे गुलाल होरीखेलैं ह्वैनिहाल गालमों लगायके । कोई  
सखी गावैं फागु अबिर उड़ावैं कोई कोई रंग नावैं पिय  
शीश सुख पायके ॥ कहै श्रीपाल इमि गोपकी दुलारी  
सारी नैनन सों बारबार बारि बरसायके । आनि उर  
करुणा विहाय संग कूबरी को कीजिये सुखारी ब्रज ना-  
रिन को आयके ॥ १२ ॥

### दोहा ॥

रस रमेशभुज खण्ड बिधु अब्द सुचैत्र बसन्त ।  
भयोपूर्ण रविमास यह पढ़त होत दुखअन्त ॥  
दिशि दक्षिण है अवध तें योजन सप्त प्रमाणु ।  
ग्राम कनू सुलतानपुर नाम जिला को जानु ॥  
जन्म भूमि मेरी तहां बसो बास तेहिं ठौर ।  
श्याम राधिका चर्ण लागि रहत हमारी दौर ॥

इति बारहमासा संपूर्णम् ॥



# सुल्तानपुर रियासत असेठी के रईसों का नाम ॥

## श्रीराजादिगपालसिंह

### बारहमासा ।

१ राजाहरिचन्दसिंह	२ बाबूजैचन्दसिंह	
१ राजादलपतिसाहि	२ बाबूजैचन्दसिंह	३ बाबूसबासिंह
१ राजाविश्वेश्वर	२ बाबूअर्जुनसिंह	३ बाबूप्रयागप्रसादसिंह
१ बख्शसिंह	२ राजामाधोसिंह	३ गुरबख्शसिंह
	१ लक्ष्मणसिंह	३ जिनन्दः
	१ दातुपुत्र	
१ बाबूजगमोहनसिंह	२ बाबूमनमोहनसिंह	३ भैरोबख्शसिंह
१ जिन्दः	१ जिन्दः	३ जिन्दः
१ बाबूयदुनाथासिंह	१ बाबूश्रीपालसिंह	
१ जिन्दः	१ जिन्दः	

इससे मेरा समाचार समुझलेना ॥



## अथ बारहमासा ॥

दो० लागत मास अषाढ़ के घन घेरे चहुँ ओर ।

भई बिकल लखि गोपिका बिनु श्रीनन्द किशोर ॥ १ ॥

सवैया ॥ लागत मास अषाढ़ अली घन घेरि रहे नभ  
में करि जोरा । हौं श्रीपाल बिहाल पिया बिनु लागत हैं  
तन पौन भकोरा ॥ गावत को किल भावत नाहिं सोहात  
न शोर मचावत मोरा । हा घन श्याम कि हा घन श्याम  
हमें तजि सोवत कूबरि कोरा ॥ १ ॥

दो० सावन मन भावन नहीं आवन ब्रज को कीन ।

परि कूबरि के फन्द महँ बिनु मोलहिं मन दीन ॥ २ ॥

सवैया ॥ सावन ताहि सोहावन लागत हैं मन भावन  
भौन में जाके । ऐसे मों आली बिदेशी बिदेशहि छोंड़ि  
बसे अपने गृह आके ॥ कासों कहों श्रीपाल बिथा दिन  
रौनि जरीं दव मों बिरहाके । प्यारे पिया हूँ को दोष नहीं  
तेहिं राख्यो सखी कुब्जा बिरमाके ॥ २ ॥

दो० अपने जिय काधों धरी भादों याद वराय ।

लजे नहीं हमको तजे भजे कूबरि हि जाय ॥ ३ ॥

सवैया ॥ भादों में घन घेरि रहे चहुँ ओर न मोरन  
शोर मचायो । भावत ना नँदलाल बिना श्रीपाल कहै  
दुख जात न गायो ॥ दामिनि यों दमकै घन में मनो  
काम कृपाण उधारि दिखायो । कंसकी चेरी लियो बश  
कै मन मोहन वासों न आवन पायो ॥ ३ ॥



दो० आयो मास कुआर सखि घर नहिं नन्दकुमार ।

मार मार शरकीकरत करैं कौनि उपचार ॥ ४ ॥

सवैया ॥ मासकुआर लग्यो सजनी अजहूं गृह नन्द  
कुमार न आये । बीति गई वर्षाकी समयरी पिया पिय  
चातक शोर मचाये ॥ प्राण पियारे बिना श्रीपाल बिथा  
तनकी अब कौन नशाये । हा ब्रज चन्द कि हा ब्रज  
चन्द न कूबरि फन्दतें आवन पाये ॥ ४ ॥

दो० लगी करदसी आय हिय देखि शरदको चन्द ।

बढ़ी दरद आये नहीं कातिकहूं नँदनन्द ॥ ५ ॥

सवैया ॥ ब्रजचन्द बिना अवलोकि हमैं मृग अंक  
सखी सुख दावन भो । न फटै छतिया न घटै रतिया  
घन श्याम बिना डग बावनभो ॥ श्रीपालकहैं इमि गो-  
प सुता नँदलाल बिना दृग सावन भो ॥ मनभावन  
कूबरि संग रमे अलि कातिक हूं नहिं आवनभो ॥ ५ ॥

दो० मारगशिर आयो सखी लगी सतावन शीत ।

प्राणपियाबिनुरैनियह क्योंकरि होइ व्यतीत ॥ ६ ॥

सवैया ॥ मारगशीर्ष लग्यो सजनी घनश्याम बिना  
यह भो दुख दाई । जातें नहीं बिछुरे कबहूं श्रीपाल  
सो ना अब देत देखाई ॥ हा मनभावन भूलि हमैं तुम  
और सों जायके प्रीति लगाई । पाये दयानिधि नाम  
जऊ हिय माहिं तऊ करुणा नहिं आई ॥ ६ ॥

दो० लग्यो महीना पूष को भग्यो हिये तें चैन ।

पग्यो कूबरी नेह हरि जग्यो इतैं मन मैना ॥ ७ ॥

सवैया ॥ पूषतुषार परै सजनी बिन नन्दकुमार न  
जात सहोरी । मैन सतावत रैन न आवत चैन सुनैन



प्रवाह बह्योरी ॥ शाल दुशालन लालबिना मोहिं भावत  
सेज न जात रह्योरी । कौन हरै दुख प्राण पिया श्रीपा-  
ल जो और के नेह नह्योरी ॥ ७ ॥

दो० माघ मास मनभावतो जुपै आवतो धाम ।

तो नशावतो सर्व दुख नहिं सतावतो काम ॥ ८ ॥

सवैया ॥ माघप्रवेश कियो जबतें तबतें न कछू हिय  
भावतो है । लगीं पांचै बसन्त की नाचैं मयूरतनांचै  
सीवेतन लावतो है ॥ अलि गुंजैं नवीन प्रसूननपै श्रीपा-  
ल महा सुख पावतो है । इत चाहत प्राणको अन्त भयो  
तजि कबूरी कन्त न आवतो है ॥ ८ ॥

दो० फागुन मों आये नहीं प्राण नाथ बल बीर ।

केहि प्रकार धीरज धरें पेखि गुलाल अबीर ॥ ९ ॥

सवैया ॥ आली बिना बनमालीपिया हम फागुनसों  
किमि प्राण बचावैं । खेलत रंग सबै पिय संग उमंग  
अनंगकी अंगनि छावैं ॥ बेबलबीर गुलाल अबीर कहो  
कापे छोंडि के पीर बुझावैं । लाल बिना श्रीपाल कहै  
विरहानल ज्वाल सही नहिं जावैं ॥ ९ ॥

दो० मासायो मधुको अली चली काम की सैन ।

भयोहरौलबसन्तहै लहव कौनबिधि चैन ॥ १० ॥

सवैया ॥ आवतहीं मधुमासके मैन बियोगिनि को  
शर पैने चलायो । जावैं न भागि बिचारि मनो यह घेरि  
चहुं कित आगि लगायो ॥ प्रीतमप्यारे बिदेश बसे श्री  
पाल अँदेश महा उरझायो । हाल अवातीकी कौन कहै  
परि घाती के फन्द न पाती पठायो ॥ १० ॥

दो० चल्यो मास बैशाख करिकियो चहै तन राख ।



प्राणपियाबिनु बीतिबो भये कठिन द्वैपाख ॥ ११ ॥

सवैया ॥ मधुमास निरास के जात भयो बैशाखहुं आस  
न आइबे की । अलि बेबलबीर उशीर मलै उपचारहैं दाह  
बटाइबे की ॥ श्रीपाल कहै विरहागि दहै बिनु श्याम  
न यत्न बुझाइबे की । अब हाली मिलो बनमाली हमैं  
जिय चाह जो मेरे जिलाइबे की ॥ ११ ॥

दो० गयो बीति बैशाख अब चल्यो क्रोध करि जेठ ।

पिय सँदेशपायों नहीं है अलि बड़ो चपेट ॥ १२ ॥

सवैया ॥ बीति यकादश मास गयो अब जेठ अनीति की  
नेइ जमायो । पेखि अकेली सहेली हमैं निशिबासर होली  
की भांति जलायो ॥ कहै श्रीपाल हमैं तबतो हितके बन  
में अधरात बोलायो । गांहक भे अब कूबरी के अलि ना-  
हक मोहिं कलंक लगायो ॥ १२ ॥

स्तुति गोपियों की श्री कृष्ण से ॥

सवैया ॥ जब डारिहों प्राण निछावरि कै तब प्राण  
पिया तुम आवहुगे । जरि जाइहैं जो विरहानल में श्री  
पाल कहै तो बुझावहुगे ॥ जेहिं अङ्कनि मोहिं कलंक  
लग्यो कुब्जै तेहि अंक लगावहुगे । अब दासी के नाथ  
कहाय के आपने मातु पिताहि लजावहुगे ॥ १ ॥

दो० इति शुभाब्द उन्नीससै पैंतालिस आषाढ़ ।

शुक्ल पक्ष पूरण भयो पढ़त मिटै दुख गाढ़ ॥

श्री काशी तैं जानियो पश्चिम चालिस कोस ।

राज्य अमेठी में रहत राखत श्याम भरोस ॥

इति शुभम् ॥